Research Paper | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2025

“नई शिक्षा नीति 2020 में युवा-शक्ति के निर्माण में स्वामी विवेकानंद के ‘युवा जागरण’ का महत्व”

सुनीता शर्मा [1] | डॉ. माधुरी दत्ता [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा संकाय, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

[2] शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा संकाय, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th February 2025	28th February 2025

भारत का भविष्य उसकी युवा-शक्ति में निहित है—यह विचार केवल आधुनिक शिक्षा शास्त्र का निष्कर्ष नहीं, बल्कि भारतीय दार्शनिक परंपरा की दीर्घकालीन मान्यता है। इस परंपरा को सर्वाधिक स्पष्टता और दृढ़ता के साथ जिस महापुरुष ने प्रतिध्वनित किया वह हैं स्वामी विवेकानंद। उन्होंने अपने समय के युवाओं में एक ऐसी चेतना जगाने का प्रयत्न किया जो उन्हें केवल व्यक्तिगत विकास की ओर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय निर्माण के महान उद्देश्य की ओर प्रेरित करती थी। दूसरी ओर, 21वीं सदी के भारत में प्रस्तुत नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 का केंद्रीय ध्येय भी एक ऐसे युवा वर्ग का निर्माण करना है जो ज्ञान से सम्पन्न, मूल्याधारित, नवाचारी और राष्ट्रहित में समर्पित हो। इन दोनों दृष्टियों को साथ रखकर देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि नई शिक्षा नीति के मूल में विवेकानंद के ‘युवा जागरण’ सिद्धांत की आत्मा गहरे स्तर पर प्रवाहित है।

स्वामी विवेकानंद का ‘युवा जागरण’: चेतना, चरित्र और चैतन्य का संदेश

विवेकानंद ने भारतीय समाज को उसके अंतर्निहित बल का बोध कराया। उनके विचार में ‘Education is the manifestation of perfection already in man’—यह घोषणा बताती है कि मनुष्य के भीतर छिपे सामर्थ्य को सही शिक्षा के माध्यम से बाहर लाना ही वास्तविक शिक्षण का उद्देश्य है। युवाओं के संदर्भ में यह विचार और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि युवा वह अवस्था है जहाँ मन ऊर्जा, संकल्प, उत्साह और दिशा ग्रहण करने की उच्चतम क्षमता रखता है।

विवेकानंद का ‘युवा जागरण’ केवल प्रेरणात्मक भाषणों का संग्रह नहीं था; वह एक समग्र जीवन-दृष्टि थी जिसमें आत्मबल, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति, वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम दिखाई देता है। उन्होंने बार-बार कहा कि यदि भारत को उठाना है तो उसके युवाओं में आत्मविश्वास, निर्भीकता और करुणा की भावना जागृत करनी होगी। यह जागरण आज भी उतना ही प्रासंगिक है, विशेषकर ऐसे समय में जब वैश्वीकरण, प्रतियोगिता, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक जटिलताओं के बीच युवाओं की भूमिका और अधिक विस्तृत हो गई है।

NEP 2020: शिक्षा को केवल रोजगार नहीं, जीवन-निर्माण से जोड़ने का संकल्प

भारत की शिक्षा व्यवस्था लंबे समय तक ऐसी संरचना में बँधी रही जहाँ ‘सूचना’ को ‘शिक्षा’ का पर्याय मान लिया गया था। नई शिक्षा नीति 2020 इस प्रवृत्ति को बदलते हुए शिक्षा को समग्र मानव विकास के रूप में प्रस्तुत करती है। NEP 2020 में स्पष्ट कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार-योग्यता नहीं, बल्कि ऐसा नागरिक तैयार करना है जो विचारशील, नैतिक, संवेदनशील, रचनात्मक और उत्तरदायी हो।

यहाँ पर विवेकानंद का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने कहा था कि शिक्षा वही जो चरित्र-निर्माण करे – और NEP 2020 इसी चरित्र-निर्माण को अपने मूल स्तंभों में शामिल करती है।

समग्रता (Holistic Development)

विवेकानंद मानव जीवन को एक समग्र सत्ता मानते थे—शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संतुलित विकास। NEP 2020 इसी दर्शन को अपनाते हुए कला, खेल, नैतिकता, भावनात्मक कौशल, तर्कशक्ति और रचनात्मकता को समान महत्व देती है। यह शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान का माध्यम नहीं रहने देती, बल्कि जीवन को सही अर्थों में ‘सीखने’ की प्रक्रिया बनाती है।

आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता

विवेकानंद का कहना था—“Stand on your own feet; all power is within you.”

NEP 2020 इसी विचार को Atmanirbhar Bharat की रूपरेखा में परिवर्तित करती है।

कौशल-विकास (Skill Development), व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education), स्टार्टअप संस्कृति, उद्यमिता, डिजिटल क्षमता और नवाचार आधारित पाठ्यक्रम—ये सब युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निर्णायक कदम हैं।

भारतीयता और वैश्विकता का संतुलन: विवेकानंद का आधुनिक रूप विवेकानंद भारतीय संस्कृति की गहनता और पश्चिम की वैज्ञानिक दृष्टि के अनूठे संतुलन के समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत को आधुनिक बनना है, लेकिन अपनी सांस्कृतिक जड़ें छोड़े बिना।

नई शिक्षा नीति 2020 इस संतुलन को पुनर्स्थापित करती है। यह—भारतीय भाषाओं, भारतीय दर्शन, योग और ध्यान, कला और सांस्कृतिक अध्ययन, लोकपरंपराओं को शिक्षा के केंद्र में पुनः स्थापित करती है, जबकि विज्ञान, तकनीक, नवाचार, अनुसंधान को समान रूप से प्रोत्साहित करती है। यह वही दृष्टि है जिसका बीज विवेकानंद ने बोया था—परंपरा और आधुनिकता का सृजनशील संयोजन।

युवा एक नैतिक शक्ति के रूप में: राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निहित संदेश

NEP 2020 यह स्वीकार करती है कि राष्ट्र केवल आर्थिक प्रगति से महान नहीं होता ; वह तब महान बनता है जब उसके नागरिक—विशेषकर युवा—नैतिक और उत्तरदायी हों।

इस नी ति में संविधानिक मूल्यों, मानवाधिकारों, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, सहयोग, सहिष्णुता और संवेदनशीलता को अनिवार्य तत्व के रूप में शामिल किया गया है। विवेकानंद युवाओं को केवल 'शक्ति' के रूप में नहीं, बल्कि 'नैतिक शक्ति' के रूप में देखते थे। उनके अनुसार शक्ति का मूल्य तभी है जब वह मानवता के हित में प्रयुक्त हो।

NEP 2020 का यह उद्देश्य—नैतिक मूल्याधारित शिक्षित युवा—विवेकानंद के संदेश का आधुनिक रूपांतरण प्रतीत होता है।

स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण से NEP 2020 में 'युवा-शक्ति' का पुनर्निर्माण

नीति के विविध प्रावधान विवेकानंद के विचारों की पुष्टि करते हैं

1. Experiential Learning और Practical Skills

विवेकानंद शिक्षा को जीवन से जोड़ने की बात करते थे। NEP 2020 इस आदर्श को अनुभव-आधारित शिक्षण, प्रोजेक्ट-वर्क, फील्ड-स्टडी और कौशल-आधारित पाठ्यक्रम के माध्यम से मूर्त रूप देती है।

2. Critical Thinking और Rationality

विवेकानंद ने अंधविश्वास के बजाय तर्क और वैज्ञानिकता को महत्व दिया। NEP 2020 छात्रों को विचारशील, जिज्ञासु और विश्लेषणात्मक बनाने का लक्ष्य रखती है।

3. Multidisciplinary Education

विवेकानंद कई विधाओं के संगम में विश्वास रखते थे। NEP 2020 की बहुविषयी शिक्षा इसी दृष्टि का विस्तार है।

4. Youth Leadership और Nation Building

NEP 2020 में सामाजिक उत्तरदायित्व, सामुदायिक सेवा, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रभावना को विभिन्न चरणों पर प्रोत्साहित किया गया है, जो विवेकानंद के "Nation-building through youth" सिद्धांत को सुदृढ़ करता है।

समकालीन भारत में विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता

आज का युवा डिजिटल दुनिया में जीता है, अनिश्चितताओं से जूझता है, मानसिक दबावों से गुजरता है और लगातार बदलती तकनीक के सामने खुद को तैयार रखता है। ऐसे समय में विवेकानंद का संदेश—

"You cannot believe in God until you believe in yourself."

एक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आधारशिला प्रदान करता है।

NEP 2020 इसी आत्मविश्वास को शिक्षा के माध्यम से पुनर्स्थापित करती है —चाहे वह नए मूल्यांकन तरीकों से हो, नई शिक्षण-शैली से, या सीखने की स्वतंत्रता से।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में वह परिवर्तन है जिसकी नींव स्वामी विवेकानंद के विचारों में वर्षों पहले रखी गई थी। 'युवा जागरण' का उनका संदेश 21वीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

NEP 2020 युवाओं को—सशक्त, सजग, नवोन्मेषी, नैतिक, भारतीय मूल्यों से जुड़ा, और वैश्विक दृष्टि वाला नागरिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। यह राज्यों, समाज और शिक्षा संस्थानों को प्रेरित करती है कि वे युवाओं को केवल आज के लिए नहीं, बल्कि एक विकसित, आत्मनिर्भर और मानवीय भारत के भविष्य के लिए तैयार करें।

इस दृष्टि से देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी विवेकानंद का 'युवा जागरण' दर्शन, नई शिक्षा नीति 2020 की आत्मा है—और इसी में भारत के उज्ज्वल भविष्य की संभावना निहित है।

	सुनीता शर्मा शोधार्थी, शिक्षा संकाय, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
	डॉ. माधुरी दत्ता शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा संकाय, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

REFERENCES